समकालीन भारतीय साहित्य : विविध विमर्श

विविध विधाओं के संदर्भ में

भाग -१

प्रधान संपादक

प्रो. सीताराम के. पवार

सह संपादक

प्रो. प्रभा भट्ट

डॉ. एल. पी. लमाणी

डॉ. शीला. चौगुले

डॉ. नीता दौलतकर

हिन्दी विभाग, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड

Professor
J.B.S.P.Mandal's
Mahila Mahavidyalaya, Ta.Georai, Dist. Beed

International Impact Factor Services (IIFS)

Mahila Mahavidyalaya, Ta.Georai, Dist. Beed

समकालीन हिन्दी साहित्य : विविध विमर्श

भाग – I

प्रधान संपादक
प्रो. सीताराम के. पवार
विभागाध्यक्ष एवं निदेशक
हिन्दी विभाग
कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड

सह संपादक
प्रो. प्रभा भट्ट
डॉ. एल. पी. लमाणी
डॉ. शीला चौगुले
डॉ. नीता दौलतकर

अमन प्रकाशन, कानपुर, (उ.प्र)

Professor
J.B.S.P.Mandal's
Mahila Mahavidyalaya, Ta.Georai, Dist. Beed.

समकालीन हिन्दी साहित्य : विविध विमर्श

(Collective Essays Presented at International Conference on "Diverse Criticism in Contemporary Indian Literature)

प्रधान संपादक : प्रो. सीताराम के. पवार

© : प्रधान संपादक

प्रकाशक : अमन प्रकाशन कानपुर

मुद्रक : सरस्वति प्रिंटर्स, धारवाड

वर्ष : २०१८

पृष्ट : ६३१+१२

ISBN : 978-93-86604-74-3

मूल्य : ३००

प्रतियाँ : ३००

सभी हक सुरक्षित है ।

प्रस्तुत पुस्तक में प्रकाशित आलेख, विभिन्न विचार, आदि लेखक के हैं । अतः संपादक, संपादक मंडल, मुद्रक तथा प्रकाशन इसके लिए जिम्मेदार नहीं है ।

Professor
J.B.S.P.Mandal's

98	'यमदीप' उपन्यास में किन्नर विमर्श	डॉ. एस. सी. अंगडी	308
99	डूब और पार में संघर्षरत आदिवासी	कंचन रामप्रसाद यादव,	311
100.	समकालीन हिंदी साहित्य में विविध विमर्श : दलित विमर्श	डॉ. सुलोचना.हेच.ए	314
101.	निर्मल वर्मा के कथा साहित्य में आधुनिक नारी जीवन	डॉ.संतोषकुमार यशवंतकर	316
102.	साठोत्तरी उपन्यास आवां में स्त्री विमर्श	प्रो.रमेश क.पर्वती	319
103.	समकालिन हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श	श्री मति.रियाना बेगम हुलगुर	322
104.	इंसान के वजूद को बचाए रखने की संघर्ष की गाथा को व्यक्त करता उपन्यास : आखेट	डॉ.एस टी मेरवाडे	324
105.	समकालीन साहित्य में नारी विमर्श	डॉ.ज्योति	327
106.	ममता कालिया का 'पचास कविताएँ' (स्त्री विमर्श)	डॉ. व्ही. आई. शेख	330
107.	समकालीन हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श	डॉ.मालती प्रकाश	333
108.	समाज के परित्यक्त किन्नर वर्ग की व्यथा कथा ।	डा. सुजाता पी. फातरपेखर	336
109.	समकालीन हिन्दी उपन्यासों में आदिवासी विमर्श	वी. गीता मालिनी	339
110.	जातिव्यवस्था बनाम अस्मिता की जद्दोजहद	डॉ.विलास अंबादास साळुंके	343
111.	नीला आकाश उपन्यास : दलित अस्मिता का प्रस्थान बिंदु ।	मंजुनाथ भि. बालनायक	346
112.	बुज़ुर्गों के प्रति संवेदना के दो चरम प्रेमचंद की ईदगाह और बूढ़ी काकी	-जी. नीलावती	348
113.	लेखिका मृदुला सिन्हा के उपन्यास अतिशय में स्त्री विमर्श	अश्विग्नी जोशी(सदावर्ते) डा. श्रीनिवास मूर्ति के.	350
114.	असग़र वजाहत की त्रयी उपन्यासों में अल्पसंख्यक विमर्श	राघवेंद वी मिस्किन	353
115.	चंदसेन विराट की ग़ज़लो में चित्रित दलित चेतना।	प्रा. विजयकुमार लक्ष्मण साठे	355
116.	आदिवासी विमर्श	प्रो.ज़ोहरा अफ़ज़ल	356
117.	सूखा बरगद उपन्यास में अल्पसंख्यक समाज का यथार्थ जीवन	दिलशाद अहमद	359
118.	उत्तराखंडीय पर्वतीय समाज में संघर्षरत स्त्री : विशेष कहानियों	[illegible] खान	361

Professor
J.B.S.P.Mandal's
Mahila Mahavidyalaya, Ta.Georai, Dist Beed

निर्मल वर्मा के कथा साहित्य में आधुनिक नारी जीवन

डॉ. संतोशकुमार यषवंतकर

आधुनिक युग नविता का समर्थक है और रुढियाँ नवीनता का विरोध करती है। रुढियों से तात्पर्य है समाज में प्रचलित रीति–रिवाज रुढियों के अनुसार नारियाँ पुरुश के आ ीन थी। लेकिन आज नारी षिक्षित है। पुरुश–पराधीनता की चार दिवारों से वह बाहर आ गई है। अ बवह अपना भला बुरा समझती है। आधुनिक युग में वैज्ञानिक विकास औद्योगिक क्रांति और यांत्रिक जीवन पध्दति ने पाषचात्य सभ्यता के संस्पर्श से नारियों में क्रांतिकारी परिवर्तन का बीजारोपन किया। वर्तमान समय की उपलब्धियाँ क्रांति का ही परिणाम है। विष्व में जगह–जगह क्रांतियाँ हो रही है। प्रचलित मान्यताओं की परिसमाप्ति के लिए क्रांति अपेक्षित हो गई है। नारी वर्ग ने इस मूल तथ्य को समझा है। अतः वह अपने विरुध्द पढने वाली रुढियों का प्रतिकार कर रही है। समाज में ऐसी अनेक रुढियाँ है, जो नारियों के विकास में बाधक है। अंतःषिक्षित तथा आधुनिक नारी इन रुढियों का विरोध करके उन्मुक्त जीवन जी रही है।

निर्मल वर्मा का कथा साहित्य आधुनिक जीवन से प्रभावित है। उनके कथा साहित्य में नारी के विविध रूप दिखाई देते है। स्वच्छंदी जीवन जीनेवाली नारी, प्रेमिका के रुप में नारी, आधुनिक विधवा नारी का रूप, प्रेम में असफल नारी, नारी का वेष्या रूप, बहन रूप, विवाहोपरांत परपुरुश से संबंध, पारिवारिक समस्याओं से जूझती नारी, वय साधि की दहलीज पर खडी नारी, पति की सम्पतियों के सहारे जीवन–यापन करनेवाली नारी, विवाह पूर्व पारिवारिक जिम्मदारियों के लिए संघर्षषील नारी, उन्मुक्त प्रेमिका, संगीत प्रेमी नारी, उन्मुक्त भोग लेनेवाली नारी, मध्यमवर्ग की नारी, तनावग्रस्त नारी, विवाह संस्था को न माननेवाली नारी, पत्नी जैसे विभिन्न रूपों में आधुनिक जीवन जीने वाली नारियों का चित्रण निर्मल वर्मा ने अपने कथा साहित्य में पर्याप्त मात्रा में किया हुआ है।

निर्मल वर्मा ने 'लवर्स' कहानी में प्रेमी–प्रेमिका के मनोभावों का रुपांकन तो बाहय तौर पर करती ही है, परंतु निहित कथ्य अविवाहिता आधुनिक नारी की स्थिति को आँकना है। आधुनिक नारी अपने प्रेमी से विवाह करने की विवषता मानकर यही संबंध बनाए रखना चाहती है। "नंदी वह कैन वी फ्रेंडस कॉट वी"1 नायिका पुरुश से विवाह न करके सिर्फ मित्रता कर सकने का साहस रखनेवाली आधुनिक अविवाहित नारी है, जो अपनी सूझ–बूझ रखती है। बोल्ड बनकर प्रेमी निंदी को निर्णय सुना देती है, जबकि निंदी केवल विवाह की कल्पना करता है। नायिका उसे समझाकर वापस भेज देती है, क्योंकि वह उससे विवाह नहीं करना चाहती वरन उसकी फ्रेंड बनकर रहना चाहती है। निर्मल वर्मा बताना चाहते हैं कि विवाह ही नारी की नियति नहीं है। पुरुश की समकक्षता रखनेवाली नारी अब केवल पत्नी प्रेमिका न होकर मित्र भी हो सकती है और पुरुश को निर्भिक होकर दो एक जवाब दे सकती है बिना अंजाम सोचे हुए। आधुनिक नारी पुरुश के साथ विवाह के बिना रहना या यौन–संबंध पसंद करती है। निर्मल वर्मा के उपन्यासों की नारी अपना जीवन आपनी इच्छानुसार व्यतित करना चाहती है।

Professor
J.B.S.P.Mandal's
...ila Mahavidyalaya, Tq.Georai, Dist. Beed

निर्मल वर्मा के कथा साहित्य की आधुनिक नारियां आजाद है, उन्हें परंपरा का बंधन नहीं है। वह कहीं भी भ्रमण के लिए जाती है, पराये पुरूश से विवाहित होकर भी संबंध रखती है, मित्रता करती है और पति के होते हुए पर पुरूश से प्रेम करती है। वे दिन की नायिका रायना पति को छोडकर अपने बच्चे को साथ लेकर प्राग घुमने आती है। उसका परिचय इंदी से होता है। वहां दोनों का परिचय सिर्फ तीन दिनों का है, फिर भी वह उससे संबंध रखती है। रायना और इंदी जब रोमांस करने लगते है, त बवह उसे कहती है– "क्या तुम्हे बुरा लगा उसने मेरी ओर देखा।कृ"नहीं" अगर मैं तुमसे फिर मिलुंगी तो यही होगा।2

निर्मल वर्मा की आधुनिक नारियाँ स्वच्छंद जीवन जीती हं। छूटियो के बाद कहानी की नायिका मार्था उन्मुक्त जीवन जीती है। मार्था छुटटी मनाने पेरिस गयी थी। छुटटी समाप्त होते ही मार्था का प्रेमी उसे विदा करने आता है, तो उसकी भावुक विदाई मैं देखता है। जब बासेल स्टेषन पर उतरती है। स्टेषन पर लेने आया उसका मंगेतर उसे बाहों में भर कर चूम लो है। मार्था ने छूटिटयों के दौरान अंगुठी उतार दी थी। "बड़ी लडकी धीरे से हँस पडी। मुझे डर था कि वह कही अंगुठी पहनना न भूल जाए। उसने कहा कैसी अँगुठी मेरी आँखे ओझल होते हुए प्लेटफार्म पर जमी थी। सगाई की उसने कहा पेरिस मे उसने छुटिटयों के दौरान उसे उतार दिया था।"3 इसी प्रकार नारी का और एक रूप है स्वच्छंदी विवाहित नारी जब वह नौकरी के लिए अथवा घूमने के लिए निकलती है, त बवह घर के बाहर निकलते ही अपना मंगलसूत्र निकालकर पर्स में रखती हैं ताकि हर पुरूश की निगाहें इसके सौंदर्य पर हो। पुरूशों को अपनी और आकर्शित करना उसे अच्छा लगता है। यह भी एक आधुनिक नारी का रूप है। 'एक चिथडा सूख' की बिटटी अपना घर–बार छोडकर अकेली दिल्ली जैसे महानगर में आती है। नारिकों में काम करके सूख ढूँढने की कोषिष करती है।

निर्मल वर्मा के कथासाहित्य में सभी नारियाँ विवाह का निशेध करने वाली नारियाँ नहीं है। उनमें से कुछ ऐसी नारियाँ भी है, जो विवाह को मानती हैं। विवाह उनके लिए कोई बंधन नही लगता एक चिथडा सुख उपन्यास की बिटटी तथा इरा बिना विवाह किए अपने–अपने प्रेमियों के साथ रह रही है। बिटटी अपने माता–पिता का घर छोडकर इलाहबाद से दिल्ली आकर रहती है। इरा नित्तीभाई के लिए इंग्लैण्ड से दिल्ली में आकर रहती है नित्तिभाई की षादी हो चुकी है, फिर भी इरा उन पर मरती है। बिटटी डैरी के साथ जीवन बिताना चाहती हैं। इस संबंध में डॉ षिरगांवकर कहते है "उन्हे कभी षादी की आवष्यकता महसूस नहीं हुई। आखिरकार उनके सपने टूट जाते हैं। फिर भी बिटटी ने षादी का नाम कभी नहीं लिया। आधुनिक जीवन जीने वाली नारियां मुक्त रूप से जीवन जीना चाहती हैं। उन्हें किसी का भी बंधन अच्छा नहीं लगता। उनको बंधनयुक्त जीवन पसंद नहीं है।"8

निर्मल वर्मा के कथा साहित्य की आधुनिक नारी नष्त्य और षराब से सराबोर है, चाहे ... ही या वध्द। ये नारियॉ षराब पीकर नष्त्य करती है। षराब और नष्त्य का सहारा

Professor
J.B.S.P.Mandal's
Mahila Mahavidyalaya, Ta.Georai, Dist. Beed.

लेकर वे अपना भय, अकेलापन, अजनबीपन, और दुःख कुछ समय के लिए क्यों न हो, भूल जाती है। वे दिन उपन्यास की नायिका रायना रैमान प्राग में एक होटल में षराब पीकर नष्‍य करती है। पहले दिन उन्हें स्कटस उपलब्ध न होने के कारण व जीम हुई बर्फ पर नष्‍य करने लगे। रायना जब भी होटल मे जाती, घर मे होती, अथवा घूमने जाती, तब उसे षराब की आवष्‍यकता होती है। इसी तरह लवर्स कहानी की नायिका-नष्‍य भी करती है और षराब भी पीती है तो छूटियां के बाद कहानी की नायिका मार्था और लडकी दोनों षराब पीती हैं। कथानायक बडी लडकी को बियर देता है, तो लडकी बियर से ग्लास धोने का कहती है "उसने अपनी टोकरी से गिलास निकाला जो काफी गंदा था। आस-पास पानी कहीं नही था। थोडी सी बीयर डालकर इसे धोडालो, पानी यहाँ कहाँ मिलेगा।9

निर्मल वर्मा की परिंदे, मायादर्पन, कुत्ते की मौत, अंतर, धागे, बीच बहस में, धूप का टुकडा, एक दिन का महेमान, टर्मिनल आदि कहानियों की आधुनिक नारियाँ मुक्ति की तलाष में है। उपन्यासों में लाल टिन की छत, की काया मुक्ति के लिए तडपती है। काया को अपने घर में अजनबीपन, परायापन अनुभव होता है। वे दिन उपन्यास की नायिका रायना व्दितीय महायुध्द के भय से आतंकित है। उस पर युध्द का भय छाया हुआ है और वह उस भय से मुक्ति पाने के लिए षहर-दर-षहर भटकती रहती हैं। रात का रिपोर्टर उपन्यास की उमा अपने रोग से और अपने पति से छुटकारा पाना चाहती है- " अपनी बीमारी के कारण पिछले कुछ वर्षों से उमा कभी रिषी के घर रहती है तो कभी अपने भाई के घर और दोनों घर जब असहय हो जाते है तब अस्पताल में षरण लेनी पडती है। 10 इसी बिमारी की वजह से वह जीवन से मुक्ति पाना चाहती है। अपने पति से भी छुटकारा पाना चाहती है।

निर्मल वर्मा निर्मल वर्मा के कथा साहित्य की नारियाँ आधुनिक जीवन जीती है उन्होंने इपने कथासाहित्य में जिन नारियों का चित्रण किया है, वह काल्पनिक न होकर वास्तविक है। अपने प्रवासीपन के कारण निर्मल वर्मा को अनेक आधुनिक नारियों के रूप देखने को मिले और उन्होंने अपने निजी अनुभवों का भी प्रयोग किया ळे निर्मल वर्मा के कथा साहित्य में आधुनिक जीवन जीने वाली नारी के अलग-अलग रूप दिखाई देते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 निर्मल वर्मा-जलती झाडी,पष्‍सं -17
2. निर्मल वर्मा-वे दिन,पष्‍सं.-161
3. निर्मल वर्मा-बीच बहस में ,पष्‍सं.-29
4. निर्मल वर्मा-परिंदे,पष्‍सं -73
5. डॉ. रेखा षर्मा -निर्मल वर्मा और सुरेष जोषी का कथा साहित्य,पृ.सं.8
6. निर्मल वर्मा-कव्वे और काला पानी,पष्‍सं.-108
7. निर्मल वर्मा-परिंदे,पष्‍सं.-26

Professor
J.B.S.P.Mandal's
Mahila Mahavidyalaya, Tq.Georai, Dist. Beed.